B.A. History Hon's Part-II
Paper: IV, Unit III (d), Date:- 22.8.2020 Lecture No.: 27

Lession: मलाया में राष्ट्रवाद

द्वितीय विश्वयुद्ध ने मलाया के राष्ट्रवाद को काफी प्रभावित किया और पहले वहाँ
के लोग राष्ट्रीय भावना से प्रेरित नहीं थे। वे ब्रिटिश सरकार की दासता में थे, किन्तु
ब्रिटिश नौकरशाही न्यायप्रिय और प्रबुद्ध थी। जब मलाया पर जापान का अधिकार हो
गया, तो मलयों में अभूतपूर्व राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। वे चीनी विरोधी
हो गए। 'मलाया मलयों के लिए' का नारा गूंज उठा। मलाया को जापान से मुक्ति
मिलते ही देश के चीनी-विरोधी कार्रवाई तेज हो गई। काफी संख्या में चीनी मारे जाने
लगे। जापानियों को विदा होते ही पुनः मलाया ब्रिटिश सरकार के हाथ आ गया। सितम्बर
दिसम्बर 1945 में ब्रिटिश सरकार ने उनके दल को तोड़ दिया था और उन्हें निरस्त्र कर
दिया था तथापि वे शक्तिशाली थे। खाद्य-समस्या भी उग्र थी। बर्मा से चावल का
आयात बन्द हो गया था।

द्वितीय विश्वयुद्ध में मलाया को बड़ी क्षति हुई। सार्वजनिक स्वास्थ्य
सेवा पुनर्स्थापित की गई, अस्पतालों में दवा-दारू का प्रबन्ध किया गया, स्कूल पुनः
खोले गए और दो पालियों में पढ़ाई होने लगी। अक्टूबर 1949 में मलाया विश्वविद्यालय
की स्थापना की गई। सड़कों रेलमार्गों और बन्दरगाहों में पुनः काम होने लगा। 1947
में टिन का उत्पादन 36,079 टन किया गया। 1950 तक रबर का उत्पादन तिगुना हो
गया। 1880 में ही गवर्नर सर फ्रेडरिक वेल्ड ने कहा था, "हमलोग मलाया के लोगों को
अपने मार्ग-दर्शन में शासन करने की शिक्षा दे रहे हैं।" सर लारेंस गिलमार्ड 1920 से 1927
तक मलाया का गवर्नर और उच्चायुक्त था। अतः काफी विवाद-विमर्श के बाद 1936 में
यह निर्णय लिया गया कि विकेन्द्रीकरण के मार्ग में सरकार के मुख्य सचिव का पद
ही सबसे बड़ा रोड़ा है। विक्टर पर्सेल कहता है, "ऐसा प्रतीत होता है कि राजनीतिक सत्ता
केवल राज्य हैं, उनके सुल्तान हैं और राजा के साथ उनकी सन्धियाँ हैं।" "मलय संघ
में पेनांग और मलक्का सहित नौ मलय राज्यों का एक संरक्षित राज्य के बारे में मलाया
गया। ब्रिटिश रेजीमेंट इन पदाधिकारियों की अध्यक्षता करते थे।

द्वितीय विश्वयुद्ध काल में जब मलाया पर जापान का प्रभुत्व
कायम हो गया था, उसी समय मैक माइकेल 'संघ' की योजना के साथ मलाया पहुँचा।
वह मलाया के नौ सुल्तानों से सन्धियाँ करने में सफल रहा जिसके द्वारा उन्होंने अपनी
अपनी संप्रभुता ब्रिटेन को सौंप दी। नागरिकता देने के बारे में कहा गया -(क) संघ प्रदेश
या सिंगापुर में उत्पन्न हुए सभी व्यक्तियों तथा (ख) विगत पन्द्रह वर्षों से दस वर्ष
तक रहने वाली प्रवासियों को नागरिकता दी जाएगी। जनवरी 1946 में उपर्युक्त प्रस्तावों
को एक श्वेत पत्र में प्रकाशित किया गया। इसके साथ ही विद्रोह और विरोध शुरू
हो गया। जोहोर के प्रधानमंत्री दातो ओन बिन जाफर के नेतृत्व में संयुक्त मलय
राष्ट्रीय संघ की शाखाएँ पूरे देश में बिछ गई। अप्रैल 1946 में एक कार्यकारिणी समिति
का निर्माण किया गया। इसमें प्रशासन और संयुक्त मलय राष्ट्रीय संघ के सदस्य थे।
1947 में दोनों समितियों की सिफारिश पर एक संशोधित संविधान बनाया गया। मलयों
ने उपर्युक्त योजना का भी विरोध किया। फरवरी 1948 को जब नया संविधान लागू किया
गया तो साम्यवादियों ने विद्रोह कर दिया। जून, 1948 में व्यापक हिंसात्मक घटनाएँ
घटी। यूरोपीय बागवान के मालिक कि-उत्पादक और दोफिलिंग दल के चीनी सदस्य
मारे गए। 3 अगस्त, 1948 को साम्यवादी मलाया गणतंत्र देश में ~~साम्यवाद का प्रथम~~
~~करना था~~। की घोषणा करना था।

सरकार साम्यवादियों की कमर तोड़ने के लिए दृढ़ संकल्प थी। लेकिन
साम्यवादियों ने पूरी तैयारी कर ली थी। उनके पास काफी अस्त्र-शस्त्र था और उनकी
गुप्तचर व्यवस्था काफी उत्तम थी। वे छापामार युद्ध-प्रणाली में सिद्धहस्त थे।
साम्यवाद-विरोधी चीनी काफी आतंकित थे। सर्वप्रथम करीब 24,000 मलयों का एक
सशस्त्र पुलिस दस्ता कायम किया जिन्हें छापामार जंगलों में युद्ध लड़ने का प्रशिक्षण दिया गया।

जून 1950 में ब्रिग्स योजना शुरू की गई। इसके अधीन चीनी आबादकारियों को नई बस्तियों में बसाया गया। छापामार चीनियों को इन्हीं से खाद्यान्न आपूर्ति और संवाद मिलता था। चीनी आबादकारियों की नई बस्तियों में स्कूल, सामुदायिक केन्द्र, बिजली, जल, आदि का सुप्रबंध किया गया। गृह-स्वामी को तीस वर्ष के रेहान पर एक लघु फार्म दिया गया और उसे कृषि कार्य की आर्थिक सहायता दी गई। 1953 तक ऐसी 150 बस्तियाँ कायम की गई। छापामार साम्यवादियों की आपूर्ति बंद हो जाने से उनकी गतिविधि नियंत्रित और सीमित हो गई। अक्टूबर, 1951 में उच्चायुक्त सर हेनरी गुर्नी की हत्या कर दी गई। निःसंदेह टेम्पलर की दमन-नीति से लोगों में आतंक छा गया। उसे शांति व्यवस्था कायम करने में काफी सफलता मिली। 1954 तक स्थिति में काफी सुधार हुआ। मलाया के राजनीतिक भविष्य के लिए टेम्पलर ने दो महत्वपूर्ण कदम उठाए।

1952 में संयुक्त मलय राष्ट्रीय संघ और मलय चीनी संगठन ने कुआलालुम्पुर के नगरपालिका निर्वाचन में भाग लेने के लिए गठबंधन कर लिया। इसमें इसे सफलता मिली। 1954 में टुंकु अब्दुल रहमान के नेतृत्व में इसने व्यवस्थापिका परिषद में निर्वाचित बहुमत की माँग की। उनका एक प्रतिनिधि मंडल लंदन गया। किन्तु उपनिवेश मंत्री आलिवर लिटलटन ने भेंट करने से इनकार कर दिया। 1955 में निर्वाचित बहुमत और आम चुनाव की माँग मान ली गई। आम चुनाव में अब्दुल रहमान के संयुक्त दल को 52 स्थानों में 51 स्थान मिले। अब्दुल रहमान की सरकार बनी और वह मुख्यमंत्री बना। 31 अगस्त 1957 तक मलाया को स्वतंत्र कर दिया गया। 1955 के आम चुनाव के बाद कार्यपालिका में पाँच सरकारी और छः मलय मंत्री थे। जनवरी 1956 में लंदन में आंग्ल-मलय सम्मेलन का आयोजन किया गया। ब्रिटिश सरकार ने मलाया की आजादी की माँग मान ली।

संविधान-निर्माण के लिए लार्ड रीड की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया गया। इसके दो ब्रिटिश, एक आस्ट्रेलियाई, एक भारतीय और एक पाकिस्तानी सदस्य थे। 31 अगस्त 1957 को मलाया की स्वतंत्रता की घोषणा की गई। यांग दि परतुवान एगोंग राजा बना। व्यवस्थापिका सभा में दो सदन थे। इनमें एक सिनेट और दूसरा प्रतिनिधि सदन था। सिनेट में अड़तीस सदस्य थे जिनमें ग्यारह राज्य की व्यवस्थापिका सभाएँ बाईस सदस्यों का निर्वाचन करती थी। मलयों ने इतनी शीघ्रता से आजादी पाई इसका उत्तर यह है कि अब तक भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बर्मा आदि देश ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्त हो चुके थे। ब्रिटिश सरकार ने एक प्रतिरक्षात्मक संधि कर ली। इसके द्वारा ब्रिटेन को मलाया में सैनिक अड्डे कायम करने की अनुमति दी गई। मलाया की स्वतंत्रता का अन्य कारण लोकप्रिय नेता अब्दुल टुंकु रहमान का आकर्षक और प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व भी था।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर